International Journal of Applied Research 2016; 2(9): 827-829

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(9): 827-829
www.allresearchjournal.com
Received: 22-07-2016
Accepted: 23-08-2016

डॉ दीपक पाण्डेय
मनोवैज्ञानिक बिलासपुर,
छत्तीसगढ़ (भारत)

दिलप्रीत कौर बेदी
मनोवैज्ञानिक बिलासपुर,
छत्तीसगढ़ (भारत)

Correspondence
डॉ दीपक पाण्डेय
मनोवैज्ञानिक बिलासपुर,
छत्तीसगढ़ (भारत)

शिक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ दीपक पाण्डेय, दिलप्रीत कौर बेदी

साराश
शिक्षा जगत में मनोवैज्ञानिक अभिवृत्ति प्रत्येक शिक्षक में समाहित होना चाहिये तभी वह एक अच्छा परामर्शदाता तथा स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकता है, क्योंकि वह भावी पीढ़ी का पोषक है। शिक्षक को प्रत्येक पहलुओ पर विशेष ध्यान रखना होगा, तभी वह आज के आधुनिक पीढ़ी का सर्वांगीण विकास कर पायेगा। शैक्षिक महत्व के सभी उद्देश्यों का निर्धारण करना शिक्षक का परम् उद्देश्य होना चाहिए। प्रस्तुत लघु शोध के लिए बिलासपुर नगर में स्थित तीन शिक्षा महाविद्यालय से 60 छात्राध्यापकों का जिसमें 30 महिला तथा 30 पुरूष बी.एड. प्रशिक्षार्थीयों का चयन किया गया, जिसे उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन (Purposive Sampling) विधि से चुना गया। इस अध्ययन के लिए Dr. T.S. Sodhi, (1974) द्वारा निर्मित Sodhi Attitude Scale का उपयोग किया गया। इनसे प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण करने के लिए टी–मूल्य परीक्षण का प्रयोग किया गया।
अध्यापक एवं अभिभावक, अनुशासन, जीवन एवं मानवता, देश और धर्म इन पाँच विमाओं पर छात्राध्यापकों की सभी क्षेत्रों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति पायी गई। सांख्यिकी निष्कर्ष के आधार पर सभी शून्य परिकल्पनाएँ स्वीकृत हुई, अर्थात् विभिन्न दृष्टिकोणों से छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

शब्द कुंजीः: छात्राध्यापक, अभिवृत्ति, टी - परीक्षण

प्रस्तावना
मनोविज्ञान, विज्ञान का ही एक अंग है, जो व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता हैं, हम विज्ञान के युग में रह रहे है, हमें संपूर्ण विश्व विज्ञान से ओतप्रोत दिखाई दे रहा हैं। व्यक्ति के जीवन के प्रत्येक पक्ष को मनोविज्ञान ने प्रभावित किया है। आधुनिक सभ्यता तथा संस्कृति भी मनोविज्ञान की ही देन हैं। National Society For The Study Education (2008) विद्यार्थियों द्वारा अध्यापक व अभिभावक के प्रति मनोवृत्ति, अनुशासन, देश, धर्म तथा जीवन एवं मानवता आदि के प्रति मनोवृत्ति को प्रयोग में लाकर प्रमाणित करना, जैसे गुण मनोविज्ञानिक अभिवृत्ति के अंतर्गत आते है।
आधुनिक युग में नवीन शिक्षण विधियाँ, नवीन तकनीकी अपनाकर ही शिक्षक छात्रों में प्रचलित नवीन पाठ्यक्रम की समस्याओं को समझने, उनका विश्लेषण तथा समाधान करने के लिए बौद्धिक क्षमता एवं कौशल का विकास कर सही शिक्षा प्रदान कर सकता है। शिक्षक में मनोवैज्ञानिक अभिवृत्ति रहने पर ही वह विद्यार्थियों में मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास कर सकता है। इसलिए शिक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों में ऐसी अभिवृत्ति नितांत आवश्यक हैं। शिक्षा के क्षेत्र में मनोवैज्ञानिक अभिवृत्ति की महत्वपूर्ण भूमिका है। इससे छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण, समस्या को समझने व हल करने की क्षमता तथा विषय के प्रति लगाव विकसित होता है। शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों में ऐसी अभिवृत्ति सहज रूप से की जा सकती है। बी. एड. छात्राध्यापक भावी शिक्षक हैं, तथा इनमें मनोवैज्ञानिक अभिवृत्ति परम् आवश्यक है ताकि शिक्षकीय जीवन में अभिवृत्ति का विकास कर सकें। अभिवृत्ति या मनोवृत्ति शब्द का व्यवहार हम प्रायः अपने दैनिक जीवन में करते रहते है। इस शब्द से हम सभी परिचित है। अभिवृत्ति व्यक्ति के मन में एक विशिष्ट दशा होती है, जिसके द्वारा वह समाज की विभिन्न परिस्थितियों, वस्तुओं, व्यक्तियों आदि के प्रति अपने विचार या मनोभाव प्रकट करता है। अर्थात् हम कह सकते है कि "विशिष्ट वस्तुओ के प्रति विशेष रूपों में व्यवहार करने की प्रवृत्ति (झुकाव) ही मनोवृत्ति है।" परंतु समाज मनोविज्ञान में मनोवृत्ति से जो अर्थ लगाया जाता है, वह इस साधारण अर्थ से कहीं अधिक वैज्ञानिक, निश्चित एवं वस्तुनिष्ठ हैं। Thurston (1946) किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु के पक्ष या विपक्ष में धनात्मक या ऋणात्मक भाव (fect) की तीव्रता को मनोवृत्ति कहते है, यह अनुभवों का सह उत्पाद है। paulose (1995) इन्होंने निष्कर्ष दिया कि महिला तथा

पुरूष बी.एड. प्रशिक्षार्थियों की अभिवृत्ति स्तर में अधिक भिन्नता नहीं पाई गई। Auduk (2009) इन्होंने अपने निष्कर्ष में पाया कि महिला व पुरूष प्रशिक्षार्थियों के अभिवृत्ति में कोई अंतर नहीं होता। GHOS (1986) ने अपने अध्ययन में पाया बालकों और बालिकाओं की अभिवृत्ति में अधिक अंतर नहीं पाया गया। अभिक्षमता एवं अभिवृत्ति के बीच में सकारात्मक संबंध होता है। Bandhopadhyay (1984) इन्होंने अपने निष्कर्ष में यह पाया कि अभिभावकों की शिक्षा एवं उनके सामाजिक आर्थिक स्तर में अभिवृत्ति का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। Dani (1984) ने अपने अध्ययन में पाया कला संकाय की अपेक्षा विज्ञान संकाय के विद्यार्थियों में अभिवृत्ति अधिक पायी जाती है। छात्र और छात्राओं की अभिवृत्ति में अधिक भिन्नता नहीं पाई गई। Bambay (1982) ने अपने अध्ययन में पाया लड़के एवं लड़कियों में वैज्ञानिक अभिवृत्ति में कोई भिन्नता नहीं पाई गयी। उच्च शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्रों में उच्च वैज्ञानिक अभिवृत्ति पाई गई जबकि सामान्य शैक्षिक उपलब्धि वाले छात्रों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति भी सामान्य स्तर की रही। Secord & Backman (1964) अपने वातावरण के कुछ पक्षों के प्रति व्यक्ति के अनियंत्रित भाव, विचार और कार्य करने के पूर्व वृत्ति ही अभिवृत्ति है। अतः निष्कर्षों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि लिंग के आधार पर अभिवृत्ति समान होती है।

उद्देश्यः

प्रस्तुत शोध अध्ययन विभिन्न शिक्षा महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों से संबंधित हैं। जिसका मूल उद्देश्य विभिन्न मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर छात्राध्यापकों के अभिवृत्ति का अध्ययन करना हैं।

परिकल्पनाएँः प्रस्तुत अध्ययन के लिए निम्नानुसार शून्य परिकल्पनाएँ निर्मित की गई हैं :

1. शिक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों की अध्यापक एवं अभिभावक के प्रति अभिवृत्ति में कोई अंतर नहीं होगा।
2. शिक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों की अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति में कोई अंतर नहीं होगा।
3. शिक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों की जीवन एवं मानवता के प्रति अभिवृत्ति में कोई अंतर नहीं होगा।
4. शिक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों की देश के प्रति अभिवृत्ति में काई अंतर नहीं होगा।
5. शिक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों की धर्म के प्रति अभिवृत्ति में कोई अंतर नहीं होगा।

क्रियाविधि

अनुसंधान क्रियाविधि के अंतर्गत चरों, तथा अभिवृत्ति के द्वारा प्रतिदर्ष का निष्पादन देखने के लिए मनोवैज्ञानिक परीक्षण का उपयोग किया। अध्ययन में आश्रित चर छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति की विमायें एवं स्वतंत्र चर बी.एड. प्रशिक्षार्थी को लिया गया।

प्रतिदर्श

प्रस्तुत लघु शोध के लिए बिलासपुर नगर में स्थित तीन शिक्षा महाविद्यालय से 60 छात्राध्यापकों का जिसमें 30 महिला तथा 30 पुरूष बी.एड. प्रशिक्षार्थी थे का चयन किया गया, जिसे उद्दश्यपूर्ण प्रतिदर्शन (Purposive Sampling) विधि द्वारा चुना गया।

उपकरण

इस अध्ययन के लिए Dr. T.S. Sodhi (प्रमुख शिक्षा–विभाग पंजाब विश्वविद्यालय) द्वारा निर्मित Sodhi Attitude Scale का उपयोग किया गया, जिसका प्रकाशन सन् 1974 में हुआ, यह पाँच आयामों में विभक्त है। अध्यापक एवं अभिभावक (Teachers and Parents), अनुशासन (Discipline), जीवन एवं मानवता (Life and Humanity), देश (Country), धर्म (Religion). यह उपकरण पूर्णतः वैध एवं विश्वानीय है।

परिणाम एवं विवेचना

प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण करने के लिए टी–मूल्य परीक्षण ;ज् जमेजद्ध का प्रयोग किया गया। माध्य (Mean) निकाला गया। दो मध्यमानों के बीच सार्थकता की जाँच की गई एवं .01 तथा .05 विश्वास स्तर पर सार्थकता की जाँच कर व्याख्या की गई।

<u>तालिका</u>

चर अभिवृत्ति की विमाएँ	लिंग	प्रतिदर्श संख्या	मध्यमान	एस. डी	टी–मूल्य	डी. एफ.	सार्थकता. 05 स्तर पर
अध्यापक एवं अभिभावक	पुरूष	30	5.57	5.52	0.24	58	असार्थक
	स्त्री	30	5.9	4.88			
अनुशासन	पुरूष	30	4.0	7.46	0.56	58	असार्थक
	स्त्री	30	3.26	6.55			
जीवन एवं मानवता	पुरूष	30	5.66	7.46	0.71	58	असार्थक
	स्त्री	30	4.36	6.55			
देश	पुरूष	30	7.26	3.96	0.24	58	असार्थक
	स्त्री	30	7.0	4.24			
धर्म	पुरूष	30	11.66	6.30	0.27	58	असार्थक
	स्त्री	30	12.13	6.58			

गणना द्वारा प्राप्त मान के अनुसार प्रथम विमा अध्यापक एवं अभिभावक में ज का मान 0.24 है, जो कि तालिका के मान अर्थात् 58 कि पर 0.05 स्तर पर 2.00 व 0.01 स्तर पर 2.66 है। इससे स्पष्ट होता है कि गणना का मान तालिका के मान से दोनों स्तर पर कम है। अर्थात् सार्थक अंतर नहीं है। अतः प्रथम परिकल्पना स्वीकृत होती है। इसलिए हम कह सकते है कि छात्राध्यापकों का 'अध्यापक एवं अभिभावक' के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति हैं।

द्वितीय विमा अनुशासन में t का मान 0.56 है, जो कि तालिका के मान अर्थात् 58 df पर 0.05 स्तर पर 2.00 व 0.01 स्तर पर 2.66 है। अर्थात् सार्थक अंतर नहीं है, इसलिए दूसरी उपकल्पना स्वीकृत होती है। जिससे यह सिद्ध होता है कि छात्राध्यापकों का अनुशासन के प्रति अभिवृत्ति धनात्मक हैं। तथा महिला व पुरूष छात्राध्यापकों की अभिवृत्ति में विशेष भिन्नता नहीं है।

तृतीय विमा जीवन एवं मानवता में t का मान 0.71 है, जो कि तालिका के मान 58 df पर 0.05 स्तर पर 2.00 तथा 0.01 स्तर पर 2.66 है, जो कि आवश्यक मान से कम होने के कारण तीसरी उपकल्पना स्वीकृत होती है। हालांकि पुरूषों की अपेक्षा महिला

छात्राध्यापकों में इस अभिवृत्ति स्तर में थोड़ी कमी अवश्य देखने को मिली पर सार्थक अंतर नहीं था। जिससे यह सिद्ध हो जाता है कि छात्राध्यापकों का जीवन एवं मानवता के प्रति अभिवृत्ति धनात्मक है।

चौथी विमा देश में t का मान 0.24 है, जो कि तालिका के मान 58 df पर 0.05 स्तर पर 2.00 व 0.01 स्तर पर 2.66 है। अर्थात् सार्थक अंतर नहीं है, इसलिए चौथी उपकल्पना स्वीकृत होती है। अतः यह सिद्ध होता है कि छात्राध्यापकों की देश के प्रति अभिवृत्ति धनात्मक है।

पाँचवीं विमा धर्म में t का मान 0.27 है, जो कि तालिका के मान 58 df पर 0.05 स्तर पर 2.00 व 0.01 स्तर पर 2.66 है। अर्थात् यहाँ भी सार्थक अंतर नहीं है, इसलिए पाँचवी उपकल्पना भी स्वीकृत होती है। अतः यह सिद्ध होता है कि छात्राध्यापकों की देश के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है।

प्रस्तुत सभी परिकल्पनाओं के परिणामों की विवेचना करने पर यह सिद्ध होता है कि सभी स्तर पर हमारी शून्य उपकल्पना स्वीकृत होती है, जिससे यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि छात्राध्यापकों की सभी पाँच विमाओं अध्यापक एवं अभिभावक, अनुशासन, जीवन एवं मानवता, देष तथा धर्म के प्रति धनात्मक अभिवृत्ति है एवं शिक्षा महाविद्यालय के छात्राध्यापकों में लिंग के आधार पर भी अभिवृत्ति में कोई अन्तर नहीं प्राप्त हुआ।

संदर्भ ग्रंथ

1. सिंह, लक्ष्मी (1980). मनोविज्ञान प्रयोग एवं परीक्षण, भार्गव आफसेट्स।
2. पुरोहित, आनंद (1990). प्रयोगात्मक मनोविज्ञान, म.प्र. हिन्दी ग्रंथ अकादमी।
3. भटनागर, ए. बी. व भटनागर, मीनाक्षी (1992). मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, सूर्या पब्लिकेशन मेरठ।
4. भटनागर, आर. पी. (1997). मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन मूल्यांकन, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।
5. भार्गव, महेश (1997). आधुनिक मनोविज्ञान परीक्षण एवं मापन, प्रिंटर्स पैलेस कमलानगर, आगरा।
6. सुलेमान, मुहम्मद (2005). उच्चतर समाज मनोविज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास।
7. सिंह, अरूण कुमार (2005). मनोविज्ञान, समाज शास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास।
8. Garat, H. (1973). Statistics in Psychology and Education, Mumbai.
9. N.C.E.R.T. (1993). Journal of India Education.
10. Paulose, J.P. (1995). The influence of Scientific Attitudes of University Entrants of their process outcomes in Physics, Experiments in Education.
11. Ayduk, ozlem, Anettgyuruk, & Anna, L. (2009). Rejection Sensitivity Moderates the impact of ejection of self-concept clarity, personality & social Psychology Bulletin 35.11 (2009): 1467.